जम्भवाणी समाज कल्याण का शास्त्र : एक अध्ययन

शारदा
शोधार्थी (हिन्दी)
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार
सभा (क्षेत्रीय केंद्र धारावाड)

किसी धर्म की जीवन पद्धति उसके गुरू के आदर्शों और पुनीत वचनों के सार संचयन स्वरूप होती है। बिश्नोई धर्म के संस्थापक के रूप में श्री हरि जम्भेश्वर बहुमुखी प्रतिभा युक्त महापुरूष थे। " इनका जन्म १४५१ में पीपासर राजस्थान के पंवार वंशीय राजपूत श्री लोहट जी के घर श्रीमती हंसा जी के गर्भ से हुआ था।"[१] आपको बालपन में शांत प्रिय वातावरण एवं चिंतनशीलता बहुत पसंद थी जिसके चलते माता पिता बहुत चिंतित रहते थे। समय के घूमते चक्र ने गुरू जम्भेश्वर को ब्रह्मचारी के संकल्प को दृढ़ किया तथा १४८३ ई० में माता-पिता की मृत्यु के पश्चात घर त्यागकर पूर्णत ज्ञान की खोज में लीन हो गए तथा निरंतर सत्संग और हरिचर्चा को दिन चर्चा बना लिया। "सन् १४८५ में यही पर अपने बीस जमा नौ नियम वाले बिश्नोई पंथ का प्रवर्तन किया, सत्य निष्ठा, मानवतावाद और प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव से ओत-प्रोत होकर ऐसी परम्पराएँ स्थापित की जो मानव मात्र के उन्नयन एवं कल्याण के निमित थी।"[२] सबसे महत्त्व बात है कि गुरू जम्भेश्वर ऐसे संक्रनित सामाजिक धार्मिक विषमताओं का दंश झेलते मानव को नई शक्ति प्रदान करते हुए साामजिक विद्रूपताओं से लड़ने का सामर्थ्य प्रदान किया। कहना संगत होगा कि व्यष्टि के समष्टि रूप को समाज कहा जाता है। "मनुष्य ने आदि से अब तक अपनी निश्चित लक्ष्यों की पूर्ति के स्वरूप नैसर्गिक स्वभाव से एकत्रित रहने की व्यवस्था को विकसित किया और व्यक्तियों (पुरूष एवं महिला दोनों) का एक ऐसा संकलन बनाया।"[३] जिस से मनुष्य को सम्यक संतुष्टि के साथ-साथ निश्चित व्यवहार विशिष्ट संबंध की स्थापना ने रीति रिवाज और परम्पराओं की नींव डाली। यह आगे चलकर जीवन शैली बनते हुए संस्कृति कहलाने लगी गयी। इसी समाज में मनुष्य अपे जन्म से मृत्यु पर्यंत अपनी आन्तरिक एवं बाह्य क्रियाएँ करता है। यह सभी प्रकार की क्रियाएँ प्रेरित और निर्दिष्ट होती है। इनको निर्दिष्ट करना चुनौती भरा कार्य है क्योंकि इसके चलते सामाजिक व्यापकता के दौरान अन्तविरोध और चुनौती भरे पड़ाव को पार करना होता है।

गुरू जम्भेश्वर ने यह सब कार्य करते हुए उन विरोधों की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया जो उनके मार्ग में भटकाव की स्थिति पैदा करते हुए उनका असफल करने का कार्य कर रहे थे। "अपने सच्चे और अच्छे उद्देश्य को लेकर चले जम्भेश्वर ने समाज मनुष्य के जीवन की सार्थकता का बखान करते हुए अपनी अंततमयी वाणी से निरंतर मनुष्य के लिए आदर्श स्थापित करते रहे।"[२] इसके लिए उन्होंने आम, जन की पीड़ा का अनुभूत किया तथा उसकी मुक्ति के लिए उसका पथ प्रदर्शित किया यह मुक्ति सामाजिक और आध्यात्मिक द्विध्रवीय थी। सामाजिक विकास के साथ आत्मिक मुक्ति भी सामाजिक विकास की बात का आधार है यह विकास मनुष्य जम्भेश्वर की वाणी और प्रवचनों के अनुसार मनुष्य स्वयं कर सकता है। मनुष्य और पशु में प्रवृतिगत कोई भिन्नता है। केवल कर्म ही

मनुष्य को पशु से भिन्न बनाते है। गुरू की वाणी कहती है मनुष्य को कर्मों के अनुसार ही जीवन जीना पड़ता है। जम्भेश्वर की वाणी ने मनुष्य को सही मार्ग बताया है। सभी मनुष्यों की आधार भूत आवश्यकता है इसके लिए जम्भेश्वर ने समाज में भक्ति के द्वार सबके लिए खोल दिए नामदेव की परम्परा में जम्भेश्वर का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं नामदेव के बाद संगुण-निर्गुण का ऐसा धर्मगुरू कोई नहीं हुआ। जम्भेश्वर की सभी कार्यप्रणाली का आधार जम्भवाणी है। इस जम्भवाणी ने माध्यम से जम्भेश्वर ने सामाजिक दर्शन उद्घाटित किया है वह सारगर्भित ही नहीं समाज शास्त्रीय भी है।" नित्य क्रिया में चूक ना हो, खडे खडे बर्तन मांजना, सूर्य की ओर मुँह करके थूकना, किसी के छापर के तिनके को खींचना, किसी ब्राह्मण के बर्तन चुराना, पराई खेती से फल चुराना, जोगी का भीक्षा पात्र छीनना या तोडना, किसी राहगीर को लूटना, रिश्ते में छल करना, धन के संबंध में लालच करना, गाय की हिंसा, पर स्त्री के साथ व्यभिचार, चलते-चलते दातुन और शौच करना, वन में आग लगाना आदि जीवन मूल्य जम्भवाणी की आत्मा है।"[५] यह समाज शास्त्र सैद्धांतिक नहीं व्यावहारिक समाजिक जीवन पद्धति का नियमन है। हिंसा प्राणी मात्र के लिए नहीं वनस्पति के लिए भी घातक है। इस प्रकार जम्भेश्वर की हिसांत्मक कृत्यों का विरोध करती हुई, हिंसक प्रकृति वाले मनुष्यों को भी सावधान करती है। हिंसक प्रवृति के मनुष्य बलपूर्वक जीव हत्या करते हैं, वे जीवों की पीड़ा नहीं समझते। अतः हिंसा निंदनीय एवं घृणित कृत्य है।" यह मानवीय गुणों को छीनकर मनुष्य में पाशविक गुणों का संचार करते हुए मानवीय जीवन को पतन की ओर ले आती है।"[६]

सच्चे अर्थों में जम्भेश्वर ने मनुष्य को मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठा दिलवाने का कार्य करते नजर आते हैं। उनके समाज दर्शन और जीवन दर्शन में परस्पर अन्तसंबंध दिखाई पड़ता है। नारी और पुरूष की समता को लेकर जम्भवाणी स्पष्ट करती है।

"ताइयांसासू तइयां मासू, तइयां देहदमोही
उमम मध्यम क्यू जाणी जै, विवरस देखो लाई।"[७]

जो रचना ईश्वर ने मनुष्य की हैं वही रचना स्त्री की भी है। दोनो का स्वरूप महापंचभूत तत्वों से निर्मित हैं अतः दोनो बराबर होने के सामर्थ्य के पश्चात दोनो में भेद नहीं होना चाहिए। उन्होंने कबीर आदि दूसरों संतो के समान नारी की निंदा ना की और ना ही नारी को ईश्वर प्राप्ति मार्ग में बाधा माना। इतना ही नहीं उन्होंने गृहस्थ जीवन में नारी और उसके परिवार के साथ जीवन यापन करते हुए इहलौक एवं परलौक सुधारने का मार्ग सुझाया। उन्होंने संसार में मनुष्य को पलायन करने की बात नहीं की बल्कि लोक समाज की भावना के अनुसार अचरण करते हुए मर्यादाओं का पालन करने का उपदेश दिया है। अपने मानवीय और सामाजिक दृष्टिकोण को विस्तार किया। नमन व्यक्ति की वह क्षमता है जो कठोर भक्ति को भी पिघला देती है।" जे नवये नवणी कह कर जम्भेश्वर इसी बात की और संकेत करते हैं कि नरमाई मनुष्य की मनुष्यता की पहचान है। नरम स्वभाव के मनुष्य भगवान के सबसे निकट होते है क्योंकि नरम मनुष्य अभिमान और अन्य दूसरे विकारों से रहित होते हैं। जब मनुष्य विकास रहित हो जाता है तो वह कल्याण के मार्ग पर निकल पड़ता है। सुख दुख, लाभहानि, आधि-व्याधि झेलने का उसमें आत्मविश्वास आ जाता है। अतः नरम होना स्वभाव की नहीं व्यवहार की बात है। अतः जम्भेश्वर का समाज शास्त्र स्वरचित एवं युगानुरूप है। उन्होंने मनुष्य को पहले सद्चरित्र होने का संदेश दिया। उसके बाद उसकी भक्ति जिज्ञासाएँ शामिल की। यह सब जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा का द्योतन करता है। बिना लाग लपेट, बिना बाह्यचार, बिना जटिलता के भगवान की भक्ति केवल मनुष्य बन कर की जा सकती है और मनुष्य बनने आधार उसके मनुष्य सुलभ गुण अथवा मानवीय मूल्य है। "समाज में रहते हुए मनुष्य चोरी क्रोध, मोह, अंह और झूठ का सहारा लेकर जीवन शुरू करता है तो वह अपना

भक्ति मार्ग बाधित कर लेता है।"[८] वह अपने कुमार्गी कार्यों से अपना जीवन तो बर्बाद करता ही है सामाजिक बाधाए भी पैदा करता है।

"जां जा घमन्डैस घमंडू, ताकै तांव न छायो।"

उनके समाज शास्त्रीय सार स्वरूप उनकी वाणी मनुष्य को यथार्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। क्षमाशील का सार जानने की बात कहती है। जो ज्ञानी बन जाते हैं उनकी कथनी और करनी में एकरूपता आ जाती है इतना ही नहीं वह कर्म निष्ठ बन जाता और जीविका अर्जन के लिए न्यायोचित साधना का उपभोग करता हुआ सदाचारी जीवन पथ पर अग्रसर होता है। भेद विभेद और भ्रामक धारणा मनुष्य के जीवन में समाज निंदा की है। सुमरण और आदर्श दिनचर्या में सत्य, अहिंसा, अस्तेय आदि की अपनाने की बात कही है। यही सदाचार जीवन और भक्ति दोनो का आधार है। "अडसठ तरथ हिरदा भीतर, बाहर लोका चारूं।"[९]

सच्चे अर्थो में गुरू जम्भेश्वर सारतत्व के ज्ञाता गुरू थे। उनका जीवन सारा धर्म गुरू जम्भेश्वर समाज शास्त्रीय अध्ययन व्यापक आयात वाला है लोकचार, लोक प्रतीक, लोक कथा,, लोक शब्दावली, लोक परम्परा, लोक रीति, लोक नीति लोक व्यवहार के अनुकूल होते हुए समाज की उन्नति की व्याख्या करने वाला है। यह सूक्ष्म से सूक्ष्म बुराईयों को मिटाकर मनुष्य को विकास की ओर उन्मुख करता है। समकालीन समाज ही नहीं आधुनिक समाज भी जम्भेश्वर के पद् चिह्नों पर उनकी वाणी से लाभान्वित हो रहा है। "उनकी जम्भवाणी एक व्यावहारिक सामाजिक आन्दोलन का उद्घोष करती है।"[१०]

इतना ही नहीं सामाजिक प्रतिबद्ध से संबंधित जम्भवाणी एक आदर्श समाज शास्त्र का दर्शन है जो मनुष्य की मुक्ति और उसके विकास के निमित है। यह मनुष्य की सच्ची आदर्श जीवन शैली का आधार है। आदर्श जीवन शैली मनुष्य के सामाजिक और आध्यात्मिक विकास का आधार है। इसके लिए श्री गुरू जम्भेश्वर ने मनुष्य को विभिन्न प्रकार के कुसंग त्याग कर अपने कर्मों द्वारा अपने जीवन का सरल एवं आध्यात्मिक बनाने के लिए अपनी शिष्य मंडली का मार्ग प्रशस्त किया और अपने उदाहरण के माध्यम से सर कर्मों की ओर अग्रसर किया। यह समाज के कल्याण के निमित था।

संदर्भ सूची

१. सबद वाणी जाम्भों जी की (बिना प्रसंग) संवत १८८६, पत्र
२. बिश्नोई धर्म एवं समाज, डॉ० कृष्ण लाल बिश्नोई, अमर ज्योति हिसार दिसम्बर १९७१
३. समाज और व्यवस्था डॉ० हेतु भारद्वाज पृ० ७३
४. गुरू जम्भेश्वर एवं बिश्नोई पंथ का इतिहास, डॉ० कृष्ण लाल बिश्नोई पृ० १०
५. बिश्नोई आचार सहिंता, डॉ० ब्रह्मांद सरस्वती पृ० २७
६. जीवन और दर्शन संत काव्य धारा के परिप्रेक्ष्य में, डॉ० प्रदीप कुमार सिंह पृ० १०२
७. शब्दवाणी, डॉ० ईश्वरानंद गिरि, पृ० ६०
८. उत्तर भारत की संत परम्परा, डॉ० परशुराम चतुर्वेदी भूमिकार
९. शब्दवाणी, डॉ० ईश्वरनंद गिरि, पृ० ७३
१०. चुरू मंडल का इतिहास, गोविन्द अग्रवाल पृ० १०२